MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY OF JOURNALISM AND COMMUNICATION

// UNIVERSITY LIBRARY //

-: NEWS CLIPPING SERVICE -:

DATE:08 JULY. 2025

धर्म पूछकर हत्या करने और भाषा भेद पर अपमानित करने वाले एक जैसे

नवदुनिया विमर्श कार्यक्रम में भाषा विवाद विषय पर एमसीयू के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने रखी बात

नवदुनिया विमर्श

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: जिन आतंकियों ने धर्म की पहचान पूछकर पहलगाम में हिंदुओं की हत्या की और भाषा के भेद से अपमानित करने वालों में बहुत फर्क नहीं है। दोनों की दृष्टि एक समान दूषित है। यह विवाद केवल क्षणिक राजनीतिक हित साधने का टूल मात्र है। धर्म, जाति, भाषा, रंग, रूप, परिधान के आधार पर घृणा किसी राज्य या समाज की अस्मिता कैसे चमका सकती है?

यह बातें माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने सोमवार को कहीं। वे नवदुनिया कार्यालय में आयोजित विमर्श कार्यक्रम में भाषा विवादः कारण, परिणाम और समाधान का रास्ता विषय पर अपनी बात कह रहे थे। उन्होंने कहा कि अपनी फ्लाप सियासत को हिट बनाने के लिए हिंदी का विरोध यह बताता है कि एकजुट ठाकरे परिवार के पास न महाराष्ट्र के विकास के लिए कोई मौलिक विचार बचा है और न देश को आगे ले जाने लायक दृष्टि बची है। वे केवल अपनी डूबती नैया को बचा हुआ दिखाने के लिए उल्टी दिशा में पतवार चला रहे हैं। भविष्य का भारत बौद्धिक रूप से दिवालिया हो चुके दल नहीं बनाएंगे।

नवदुनिया विमर्श में चर्चा करते माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी । ● नवदुनिया

मराठी महाराष्ट्र का सोलह शृंगार है तो हिंदी पूरे देश के माथे की बिंदी

उन्होंने कहा कि ऐसी हालत में तो मुंबई के अंधेरी, सांताक्रूज, खार और बांद्रा के इलाके खाली हो जाएंगे। मुकेश अंबानी को अपना भव्य और विशाल एंटीलिया उठाकर चोरवाड़ ले जाना होगा, क्योंकि वे भी गुजराती हैं। हिंदी विरोध की लकड़ी की हांडी पर ठाकरे ब्रदर्स ये कौन सी भेलपुरी फेंट रहे हैं? हिंदी के बिना मुंबई की मांग सूनी मानिए। मराठी अगर महाराष्ट्र का सोलह शृंगार है तो हिंदी मुंबई ही नहीं पूरे देश के माथे की बिंदी है।

भाषा विरोध केवल राजनीतिक, जमीन पर हिंदी : अपनी तमिलनाडु यात्रा का अनुभव साझा करते हुए विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि त्रिची में मेरी मुलाकात वीएस राधाकृष्णन से हुई थी। वे केरल मूल के थे और दक्षिण भारत हिंदी प्रसार सभा के महासचिव रहे थे, जो हर साल तमिलभाषी बच्चों के लिए हिंदी की परीक्षा आयोजित करती है। दस साल पहले इसमें दो लाख बच्चे शामिल होते थे। यह काम उस राज्य में हो रहा था, जहां 1964 में हिंदी विरोध आंदोलन चला था। विधानसभा में बाकायदा प्रस्ताव पारित करके सरकारी स्कूलों में हिंदी को खारिज किया गया। उस आंदोलन में 84 लोग मारे गए थे। मगर 21 वीं सदी की ओर जाते भारत के दक्षिणी भाग में राधाकृष्णन जैसे हजारों मलयालम और तमिलभाषी हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगे हैं। इनकी चर्चा सियासी विरोध की खबरों में दबी रह जाती है।

इतनी घृणा है तो हिंदी सिनेमा को बाहर करना होगा

विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि हिंदी से इतनी घृणा है तो ठाकरे बंधुओं को सबसे पहले मुंबई से हिंदी सिनेमा को बाहर करना होगा। तब अमिताभ बच्चन को प्रयागराज लौटना होगा, जावेद अख्तर को भोपाल और अनुपम खेर को कश्मीर। दिग्गत एक्टर राजकुमार के स्वजन बलूचिस्तान जाएंगे, राजकपूर के ऐशावर, प्राण के स्वजन लाहौर और मनोजकुमार के रावलपिंडी। वे सब वहीं से आए थे और मराठी बोलते हुए नहीं आए थे। ठाकरे परिवार के अनुसार तब लता मंगेशकर और भीमसेन जोशी से 'भारत रत्न' वापस लेने होंगे, क्योंकि उनके कंठ से मराठी से अधिक हिंदी के स्वर फूटे हैं।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNUYA'08,JULY.2025